अन्तरा-शब्दशक्ति

एक टुकड़ा मेघ

कथा संग्रह

साधना छिरोल्या

एक टुकड़ा मेघ

(कथा संग्रह)

साधना छिरोल्या

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-004-9"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- साधना छिरोल्या

मूल्य - ६०.०० रुपये

आवरण चित्र- कनुप्रिया व्यास

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

EK TUKDA MEGH BY SADHNA CHIROLYA

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	मन की बात	5
1.	एक टुकड़ा मेघ	7
2.	विसर्जन	8
3.	रक्षाबंधन	9
4.	सहयोग	11
5.	नई सोच	12
6.	सार्थक श्राद्ध	13
7.	बचपन की यारी	14
8.	मेरी हिंदी मेरा अभिमान	16
9.	मेरे अटल	17
10.	जयहिंद	19
11.	पुस्तक मेला	20
12.	डर	22
13.	चंदा की चुनरी	23
14.	बोन्साई	24
15.	भ्रमजाल	26
16.	खजाना	27
17.	संकल्प	28
18.	नशा	29
19.	हेराफेरी	30
20.	शर्मीली	31

मन की बात

मैं साधना छिरोल्या, रानी दमयंती की नगरी दमोह (म.प्र.) की वासी। लेखन और स्वाध्याय मेरी जिंदगी का अहम् हिस्सा है। मेरी रूचि बचपन से ही पढ़ने में थी। भाषण, नाटक, वादविवाद, प्रतियोगिताओ में हिस्सा लेने के कारण गद्य में कुछ अलग ही रुझान था। मैंने माध्यमिक शाला स्तर पर ही लेखन कार्य आरम्भ कर दिया था किन्तु बाद में सांसारिक दायित्वों के निर्वहन में जिंदगी के बीस वर्ष कब गुजर गये, पता ही नहीं चला। और लेखनी को विराम सा लग गया।

वर्तमान में, मैं सामाजिक एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में मंच सञ्चालन का कार्य करती हूँ और यही एक मुख्य वजह थी, गद्य से पद्य की ओर अग्रसर होने की। "मुंशी प्रेमचंद" की लेखनी सदा से ही मेरी प्रेरणा रही है। मेरे इस साहित्यिक सफ़र में कई छोटे-बड़े संगी साथी मिले जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन दिया, जिसमें सबसे अहम योगदान मेरी बड़ी बहन का है। जिंदगी के सबसे ऐतिहासिक पल थे जब मुझे अपनी ही हितकारिणी स्कूल द्वारा हिंदी काव्य लेखन के लिये सम्मानित किया गया।

अपने प्रथम कथा संग्रह "एक टुकड़ा मेघ" में मैंने जिंदगी के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मकता के साथ अपनी लेखनी द्वारा पन्नों पर उकेरने की कोशिश की है। मेरे साहित्यिक जीवन के सबसे गौरवशाली क्षण थे जब मुझे अंतरा शब्द-शक्ति द्वारा हिंदी कलमकार सम्मान एवं काव्य संग्रह "वाह! जिंदगी" का विमोचन किया गया। मैं हमेशा एक सकारात्मक सोच के साथ जीती हूँ। हाँ मेरी ये पुरजोर कोशिश रहती है कि मैं जो कुछ भी लिखूं वह आम जनमानस के ह्रदय-पटल तक, सकारात्मकता के साथ सरलता से पहुँच सके। आप सबका आशीर्वाद हमेशा बना रहे।

मेरा प्रथम कथा संग्रह "एक टुकड़ा मेघ" मेरे परिवार के स्तम्भ परम पूज्यनीय, वंदनीय, श्रद्धेय "**श्री सुदामा प्रसाद जी छिरोल्या**" के चरण कमलों में सस्नेह सादर समर्पित।

साधना छिरोल्या

एक टुकड़ा मेघ

आधा आषाढ़ बीतने को था, बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं था। भोला के माथे पर चिंता की लकीरें साफ दिख रहीं थीं। खेत का कुआँ भी लगभग ख़ाली होने को था। लगा हुआ खेत जमींदार का था और अब तो उसने भी अपने पंप से पानी देने से इंकार कर दिया था।

भोला उसकी पत्नि चंपा और तीन बच्चे। सोचा था अबकी फसल अच्छी हुई तो बीज के लिए कुछ उधार लिया था वो पट जायेगा साथ ही बड़ी बेटी मुनिया के ब्याह के लिए भी कुछ रकम जुड़ जायेगी।

आज तो फसल की हालत देख कर भोला का जी बहुत बैचेन हो उठा। लौटते बखत बड़े बाबा को गुड़-चना का प्रसाद भी बोल आया।

रात को अनमने मन से थोड़ा सा खाना खाकर खिड़की के पास खड़ा हो गया, मन ही मन बोला "हे भगवान तुम्हीं हो पालनहार"!!

चंपा और बच्चे सो गए। भोला की आँखों से आज नींद कोसों दूर थी।

आसमान में एक, दो तारे देख उसकी उम्मीद टूटने लगी थी। उठकर मटके से एक लोटा पानी पीकर गला थोड़ा तर किया। फिर से खिड़की के पास आया, अचानक भोला ने देखा, दूर आसमान में एक छोटा सा स्याह टुकड़ा मेघ का दिख रहा है। उसकी आँखों में चमक सी आ गई। दौड़कर गया और अपनी खटिया भी खिसकाकर खिड़की के पास लगा ली। ।

भोला की निगाहें तो उस काले बादल के टुकड़े पर जमीं थीं। इतनें में मुनिया की आवाज आई "बापू अब सो भी जाओ सुबह जल्दी खेत जाना है"। अब क्या कहे भोला की यदि बारिश नहीं हुई तो खेत में भी क्या काम?? और अचानक उसे कहीं से गीली मिट्टी की सौंधी खुशबू आई। बाहर झांककर देखा तो पानी की कुछ बूंदे और टिप-टिप की आवाज। आसमान में तारे कहीं गायब हो गये और उस काले छोटे स्याह मेघ के टुकड़े ने भी एक बड़ा आकार ले लिया था।

भीतर गया और आवाज लगाई- ए चम्पा उठ। देख तो बड़े बाबा ने अपनी सुन ली। उठ मुनिया, सुबह बनिया चाचा की दुकान से गुड़-चना ले अइयो। ।

चंपा भोला और सब बच्चे बाहर बारिश में भीगने लगे। चल चंपा चाय तो बना, आज तो भोला को सबसे बड़ा खजाना मिल गया था।

विसर्जन

"आज गणेश स्थापना का आखिरी दिन था। सारे शहर में खूब चहल-पहल थी। चौराहे पर कल विसर्जन के जूलूस की तैयारी हो रही थी। पंडाल, कुर्सी, और इनाम की शील्ड वगैरह। किन्तु शेखर के मन में एक अजीब सी उथल-पुथल मची थी।

दो भाई सतीश और शेखर। माँ-बाबूजी की असमय मृत्यु के बाद सतीश दादा ने ही उसे पाल-पोश कर बड़ा किया। कभी किसी चीज की कमी न होने दी। उसकी परवरिश में दादा की शादी की उम्र भी कब निकल गई पता ही न चला। और फिर उसकी शादी हुई शिखा के साथ। ख़ुशी-ख़ुशी दिन गुजर रहे थे। किन्तु कुछ दिनों से शेखर की कुछ ज्यादा ही पार्टियाँ होने लगीं थीं। कभी ऑफिस के मित्र तो कभी कॉलेज के। ऑफिस से आकर सीधे शेखर तैयार होकर और शिखा को लेकर निकल जाता और देर रात लौटते दोनों।

कुछ दिन तो यूँ ही गुजरे और आखिर एक दिन दादा ने टोंक ही दिया "शेखर रोज-रोज इतनी देर से मत आया करो।

बहु भी साथ है और शहर का माहौल भी कुछ ठीक नहीं है आजकल। "

उस दिन तो वो कुछ न बोला, किन्तु कुछ दिन बाद दोबारा टोंकने पर उसने झल्लाकर जोर से जवाब दे दिया। कमरे में आकर शिखा भी बड़-बड़ करने लगी।

शेखर का जवाब सुनकर दादा तो मानो बिखर से गये। अपने कमरे में जाकर खुद को बंद कर लिया।

आज दो महीने बीत गए। उस दिन से दादा ने घर में खाना भी नहीं खाया। शेखर को अपने ऊपर बहुत गुस्सा भी आता है कि क्यों उसने दादा को ऐसे कड़वे शब्द बोले।

दादा बालकनी में आरामकुर्सी पर लेटकर किताबें पढ़ते थे। अब तो दादा वहां भी नजर नहीं आते। पड़ोस के बच्चे को भेजकर रोज आरती के लिये बुलाया तो भी न आये दादा। जबकि गणपति की आरती तो कभी दादा के बगैर होती ही न थी। एक अजीब सा सूनापन रहता घर में और मन में भी। कम से कम कल विसर्जन तो दादा के ही हाथ से होना चाहिए।

आधी रात होने को थी, शेखर को नींद नहीं आ रही थी। और फिर न जाने क्या सूझा, शेखर अंदर से कागज पेन लेकर आया- चिठ्ठी लिखी, अपनी गलती की माफ़ी मांगी। बचपन में भी जब उसे कुछ चाहिए होता था तब वो ऐसे ही चिठ्ठी लिखकर मांगता था।

उसे पता था दादा सुबह रोज पांच बजे तुलसी में जल चढ़ाते हैं सो चिट्ठी ले जाकर तुलसी घर में खोंस आया और सुबह होने की प्रतीक्षा करने लगा। सुबह उठकर

सबसे पहले आँगन में झांककर देखा। चिट्ठी वहाँ न थी। मन को थोडा चैन मिला कि चिट्ठी दादा को मिल गई।

सुबह से शाम बीत गई दादा के कमरे का दरवाजा न खुला। गणपति विसर्जन का समय हो रहा था। शेखर ने उदास मन से गणपति की पूजा की। और आरती की थाली उठाकर आरती शुरू की, अचानक ही उसे अपने कंधे पर एक स्पर्श महसूस हुआ, देखा तो दादा खड़े थे, उसके हाँथ कांपने लगे आँखों से ख़ुशी के आंसू बह निकले। उसने थाली दादा को पकड़ा दी।

गणपति की ओर देखा तो उसे लगा वो मुस्करा रहे हैं, मानो कह रहें हों देखो "आज मेरे विसर्जन के साथ-साथ तेरे कलुषित विचारों का भी विसर्जन हो जायेगा"। और अगले बरस, फिर से मैं ख़ुशी-ख़ुशी आऊँगा। ।

रक्षाबंधन

"सुबह से ही सिया का मन बहुत ख़राब था। आज रक्षाबंधन का दिन था। आज का दिन तो मानो उसे काटने को दौड़ता था।

बस जाकर कान्हा जी के पास बैठ गई। थाली में रखी दो राखियों में से एक कान्हा जी को बांध दी। और दूसरी राखी जैसे ही उठाई, ह्रदय तड़प उठा। मन पीछे की ओर जाने लगा, छोटा सा खुशहाल परिवार था। माँ, बाबूजी, सिया और बड़े समीर भैया। बाबूजी पुलिस में थे। सिया कहती मैं भी बाबूजी जैसे पुलिस बनूँगी और देश की सेवा करुँगी, भैया चिढ़ाते-"तू दुबली-पतली क्या जायेगी पुलिस में। देश की सेवा तो मैं करूँगा सेना में भर्ती होकर", और सच में भैया ने बहुत मेहनत की और भैया की भर्ती हो गई सेना में।

सब बहुत खुश थे। भैया की नियुक्ति सीमा पर हो गई थी। भैया जा रहे थे, सब खुश किन्तु थोड़ा दुखी भी इतनी दूर जो जा रहे थे। भैया सिया को समझा रहे थे "अरे पगली कुछ महीने बाद राखी है मैं जरूर आऊँगा। "भैया चले गए सिया बोर्ड के इम्तिहान की तैयारी करने लगी और राखी के पंद्रह दिन पहले से बेसब्री से इंतजार। पर अचानक ही सीमा पर गोलीबारी शुरू हो गई। न कोई बात और न ही कोई संपर्क हो पा रहा था। और रक्षाबंधन के दिन खबर मिली की समीर(भैया) और उसके चार जवान साथियों का कुछ पता नहीं चल रहा है। बहुत कोशिश की गई, बाबूजी ने भी धरती आसमान एक कर दिया। फिर भी कुछ न पता चला। धीरे-धीरे बाबूजी ने बिस्तर पकड़ लिया, माँ भी खामोश रहने लगी।

सिया ने भी बहुत मेहनत की और पुलिस में भर्ती हो गई। आज पाँच साल हो गये। हर साल सिया अपने हाथों से दो राखी बनाती, एक कान्हा जी को बाँधती और भैया की कुशलता की कामना करती और दूसरी भैया के लिये रखती जाती कि भैया आयेंगे, उनको एक साथ बाँधूंगी। हर पल इंतजार करती कि भैया को बताना है उनकी दुबली-पतली भी अब पुलिस बन गई है। अचानक दरवाजे की जोर-जोर से घंटी बजी, राखी हाथ में लिए-लिए ही दरवाजा खोला। बाहर पड़ोस वाले ताऊजी खड़े थे, हाँफते हुए बोले "सिया टी.वी. तो खोल जल्दी! अरे ताऊजी क्या हुआ। अरे जल्दी से समाचार तो लगा।

और जैसे ही समाचार लगाया- टी.वी. पर आ रहा था"पांच साल पूर्व सीमा पर लड़ाई में जो पाँच जवान लापता हो गए थे, वे जिन्दा हैं, सकुशल हैं। उन्हें दुश्मन ने कैद कर लिया था और अब सरकार उनको स्वदेश लाने की पूरी कोशिश कर रही है। उनमें समीर का नाम भी था। सिया ने भाई की राखी को सीने से लगा लिया। बोली" कान्हा जी ने मेरी सुन ली"। सिया की आँखों से आसूँ झर-झर बह रहे थे, लेकिन ये आज ख़ुशी के थे, उम्मीद के थे।

सहयोग

देश की सरहद से लगा एक गाँव। जहाँ चाहे जब गोलियों की गूंज सुनाई दे जाती थी। कई घरों की बाहरी दीवारों पर गोलियों के निशान साफ दिखाई देते थे। और इसी गाँव के इज्जतदार, सबकी सेवा में सदा तत्पर, एक अलग ही व्यक्तित्व वाले शख्स सूबेदार साब। सूबेदार साब की इकलौती बेटी की शादी में दो ही दिन बचे थे।

महीने भर से तैयारी चल रही थी। शादी का हर काम सूबेदारनी अपनी विशेष देखरेख में करवा रहीं थीं। ठीक शादी से दो दिन पहले- आज देवी पूजने का कार्यक्रम था। और आज सुबह से ही सीमा पर हलचल दिखाई पड़ रही थी। घर के सब लोग गाँव के बाहर माता पूजने गए हुए थे। और अचानक बारूद का एक जलता गोला सूबेदार के घर के ठीक ऊपर गिरा। थोड़ी ही देर में पूरी हवेली धू-धू करके जलने लगी। चारों ओर अफरा-तफरी मच गई।

सूबेदार के आते-आते आग ने एक विकराल रूप ले लिया। और सूबेदार साब ये सब देखकर वहीँ गिर पड़े।

आशियाना उजड़ा और दो दिन बाद शादी। थोड़ी देर बाद जब स्थिति थोडा सामान्य हुई। सब लोग गांव की चौपाल पर एकत्र हुए। सूबेदार साब का एक ही वाक्य- "बिटिया का ब्याह कैसे होगा?"

फिर क्या था, सब लोग आगे आ गये बोले हम सब तो हैं, आप फ़िक्र न करें। और फिर गॉंव की ग्राम पंचायत के कमरों में सूबेदार साब के रहने का इंतजाम किया गया।

बनिया काका की दुकान से पूरा राशन पानी, मंगू हलवाई के यहाँ की मिठाइयाँ, चौधरी चाचा के बगीचे से गेंदा, गुलाब, बेला और सेवंती के रंग-बिरंगे फूल।

हरिराम चाचा की कपड़े की दुकान से कपड़े, और सुनार काका ने भी अपनी हैसियत के अनुसार जेवर का इंतजाम किया। और सबके सहयोग से सूबेदार साब की बिटिया की शादी आज धूमधाम से संपन्न हो रही थी। सूबेदार साब के आंसू रह-रहकर बरस जाते थे।

वे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि" हे प्रभु मुझे भी कभी मौका देना कि मैं इन सबके अहसान का कुछ तो कर्ज चुका पाऊँ"।

नई सोच

आज सुबह से ही नंदिनी का मन बहुत बैचेन था।

नंदिनी और नंदू जुड़वां भाई-बहिन। नंदिनी बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल और नंदू बिलकुल इससे उल्टा उसका मन पढ़ाई में ज्यादा नहीं लगता। दोनों भाई -बहिनों ने गाँव से ही बारहवीं पास कर ली। आगे की पढ़ाई के लिए बाबूजी ने नंदू को तो आसानी से शहर में भेज दिया। किंतु नंदिनी को बड़ी मुश्किल से। शहर में दोनों एक जान - पहचान के चाचा जी के घर रहने लगे। घर के बाजू में एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र था। वहाँ एक बड़ी बहनजी आया करतीं थीं और सब शिक्षिकाओं को प्रशिक्षण देने। उनको देखकर नंदिनी सोचती - मैं भी खूब पढ़ाई करुँगी और एक दिन ऐसी ही कोई बड़ी बहनजी बनूँगी।

आज स्नातक की परीक्षा का परिणाम आया नंदिनी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई थी। ख़ुशी से फूली न समा रही थी। घर आकर नंदिनी ने ख़ुशी ख़ुशी माँ को फ़ोन पर जानकारी दी। किन्तु रात में माँ का अचानक फोन आया, कहने लगीं-"नंदिनी अब तुम वापस आ जाओ।

तुम्हारे बाबूजी कह रहे अब आगे की पढ़ाई में खर्चा बहुत है। तुम्हें तो ससुराल जाना है। नंदू को वहीँ पढ़ने दो।" सुनकर नंदिनी के पैरों की जमीं मानों खिसकने लगी।

उसने कहा माँ, बाबूजी मेरी जगह नंदू को भी तो वापस बुला सकते हैं, उसका तो पढ़ाई में मन भी नहीं लगता और वह गाँव में ही बाबूजी के साथ दुकान में ही काम कर सकता है। सुनकर माँ चुप रह गई।

नंदिनी समझ रही थी कि माँ भी बेबस और मजबूर है। बाबूजी के सामने उनकी नहीं चलने वाली। वह आगे चलकर एक बड़ी अफसर बनकर बाबूजी की सोच को बदलने की सोचा करती थी, किन्तु माँ की बातों ने उसे चिंता में डाल दिया। रात भर सो भी न पाई।

खूब सोचा और तय किया कि वह यहीं कोई पढ़ाने का काम करके अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखेगी। सुबह नंदिनी के कदम अपने आप प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की ओर बढ़े जा रहे थे एक नयी सोच, एक नए उद्देश्य के साथ"।

सार्थक श्राद्ध

"रितु, मैंने अलमारी में पैसे रख दिये हैं। शाम को बाजार जाकर पंडितों के दान व पूजन का सामान ले आना। तीन दिन बचे हैं, दादाजी के श्राद्ध के। पंडितों व नजदीकी रिश्तेदारों का खाना होगा। " रीतेश ने टाई बाँधते हुए आवाज दी।

रितु-जी जरूर शाम को गुड़िया के साथ चली जाऊँगी, कहकर काम में लग गई।

यह बात सुनकर गुड़िया के मन में एक उथल-पुथल सी मची हुई थी, कि अपनी बात कैसे बोलूं माँ-पापा से।

आखिर हिम्मत करके उसने माँ से बोल ही दिया- माँ एक बात बोलूँ,

"हाँ बोलो"

माँ, वो प्राची है न मेरी सहेली, पिछले माह जिसके पिताजी का एक्सीडेंट हो गया था।

"हाँ तो"

माँ वो शायद इस बार परीक्षा नहीं दे पायेगी। अस्पताल में इलाज पर बहुत खर्च हो गया है और उसकी दुकान भी अभी ठप्प है।

रितु ने आटा गूंथते हुए बोला तू साफ-साफ बता कहना क्या चाहती है।

माँ, मैं चाहती हूँ कि पापा ने जो पैसे श्राद्ध के लिए निकाले हैं उससे प्राची की फीस भर दी जाये।

रितु-गुड़िया तू जानती है, तेरे पापा कभी तैयार नहीं होंगे।

गुड़िया-माँ दादाजी भी तो हमेशा पढ़ाई पर जोर दिया करते थे और प्राची भी तो ब्राह्मण है, इस तरह पापा का नियम भी नहीं टूटेगा। और प्राची इस वर्ष परीक्षा भी दे देगी।

माँ करो न पापा से एक बार बात। कहकर गुड़िया कॉलेज चली गई। रात में डरते-डरते रितु ने सब बात रितेश को बताई।

गुड़िया की भी हिम्मत नहीं थी, पापा से बात करने की। सो उसने पूरी बात एक कागज में लिखकर पापा की अलार्म घडी के नीचे दबा दिया।

रितु की बात सुनकर रितेश ने कोई उत्तर न दिया और करवट बदल कर लेट गये।

गुड़िया की आँखों में तो नींद का नामोनिशान नहीं था, वह तो सुबह होने का इंतजार कर रही थी।

सुबह छह बजे अलार्म बजते ही गुड़िया का दिल धक्-धक् करने लगा, सोचने लगी अब पापा वो चिट्ठी पढ़ेंगे, और फिर क्या होगा ईश्वर जाने--।

सुबह से तो रितेश कुछ न बोले, और फिर दफ्तर जाते समय उन्होंने गुड़िया की चिट्ठी के साथ श्राद्ध के लिये निकाले पैसे भी रख दिये। बोले फीस भर देना।

यह सुनते ही गुड़िया और रितु, दोनों की आँखों में ख़ुशी के आंसू भर आये।

गुड़िया ने दादाजी की तस्वीर की ओर देखा, उसे लग रहा था कि जैसे दादाजी मुस्कराकर कह रहे हों कि यही है सार्थक श्राद्ध। ।

बचपन की यारी

पूरी रात चन्दर पलक भी न झपका पाया। रात भर मूसलाधार बारिश और ऊपर से छत से टपकता पानी। अभी पिछले ही बरस तो छत पर सीमेंट लगवाया एक साल भी न चला।

बीते बरस ने तो उसकी सारी खुशियाँ ही छीन लीं। धीरे-धीरे मन पीछे की ओर जाने लगा। वह बचपन से ही पढ़ाई में बहुत होशियार था। गणित में तो पूरे नंबर मिलते। किन्तु घर की माली हालत के चलते वह बमुश्किल बारहवीं तक ही पढ़ पाया। बस धीरे-धीरे नाते -रिश्ते, संगी -साथी सब छूटते गए। बस दो चार जगह हिसाब-किताब का काम मिल जाता उसी से गुजर बसर हो जाती। चंदा से शादी हुई और एक प्यारी सी बेटी ने जन्म लिया। और बस एक-एक पाई अपनी बेटी के लिए जोड़ने लगा। समय भी पंख लगाकर उड़ता जा रहा था। बेटी कब बड़ी हुई पता ही न चला। उसको लगता गरीबों की बेटियाँ जल्दी ही बड़ी हो जातीं हैं शायद।

पिछले साल बेटी की शादी पक्की कर दी। दान-दहेज़ भी कुछ हैसियत से ज्यादा बोल दिया। उसे लगा दो-चार जगह और काम पकड़ लेगा बेटी तो खुश रहेगी। किन्तु ठीक छह महीने पहले अचानक एक दिन चंदा खाना बनाते -बनाते बेहोश हो गई। फ़ौरन सरकारी अस्पताल में भर्ती किया, चन्दा होश में तो आ गई किन्तु फिर बिस्तर से न उठ सकी। कई बड़े डॉक्टर को दिखाया किन्तु कुछ न हुआ। बेटी की शादी के लिए जोड़े पैसे चंदा के इलाज में खर्च हो रहे थे। शायद इसी कारण चंदा भी अंदर से टूटती जा रही थी, और एक दिन चंदा ने हमेशा के लिए आँखे मूंद ली। और अब बेटी की ससुराल वाले भी शादी की बात करने लगे। उनकी बातें पैसे से शुरू होकर पैसे पर ही ख़त्म होतीं।

सुबह हुई। आज तो चन्दर बिना चाय पिए ही निकल गया। काम की तलाश में कब शाम हो गई पता ही न चला। दिन डूबने पर बेटी की चिंता भी सताने लगी। बस बड़े-बड़े क़दमों से घर की ओर चलने लगा। और अचानक सामने से आती हुई कार से जोर का धक्का लगा और चन्दर सड़क के किनारे जा गिरा। अंदर से आवाज आई देख कर नहीं चलते। चन्दर बोला-"माफ़ करना भाई मन कहीं और था"। ये आवाज सुनते ही कार चालक बाहर आया, थोड़ी ध्यान से उसको देखा और बोला अबे चन्दर तू, मुझको पहचाना??

नहीं तो!!!

मैं हरीश। तेरा हरी, तेरा बचपन वाला यार।

और उसको उठाकर गले से लगा लिया।
चन्दर, एक तो भीतर से टूटा हुआ और सामने बचपन का यार, बस फूट-फूट कर रो पड़ा। घर ले गया हरी को।
ये है मेरी बेटी कुमकुम। और तू बता अपने बारे में,

हरीश बोला मैं एक बहुत बड़ी कंपनी में इंजीनियर हूँ। आज ही तबादला होकर यहाँ आया हूँ। लेकिन मैं आज जो भी हूँ तेरी बदौलत हूँ, न तू मुझे इतनी अच्छी गणित पढ़ाता और न में बारहवीं में प्रथम आता। तूने रात-रात भर जागकर मेरी तैयारी करवाई मैंने बाद में तुझे बहुत खोजा पर तू कहीं न मिला।
अब सुना तू अपनी।
और चन्दर ने अपनी आपबीती सुनाई। अच्छा अब बहुत रात हो गई, मैं चलता हूँ, हरी ने कहा।

घर आया किन्तु आज हरीश की आँखों में नींद कहाँ? बस चन्दर और कुमकुम के बारे में सोच रहा था और सबेरा होते होते उसने एक निर्णय लिया कुमकुम का हाथ अपने बेटे के लिए माँग लेगा। कुमकुम को दहेज़ के लालची लोगो के चंगुल में फँसने नहीं देगा। साथ ही साथ चन्दर को भी अपने साथ रहने को राजी कर लूंगा। अब बचपन की यारी निभाने की बारी मेरी है"।

मेरी हिंदी मेरा अभिमान

"आज गुप्ताजी के यहाँ उनके बेटे के जन्मदिन की पार्टी है। रागिनी ने जाने के लिये हाँ तो कह दिया किन्तु उसके मन में एक अनजाना सा भय समाया हुआ था। गुप्ताजी उसके पति राहुल के दोस्त भी और साहब भी। गुप्ता जी के रहन-सहन का स्तर उसके सामने बहुत ऊँचा था। सब अंग्रेजी में बात करते। ऐसा नहीं था कि रागिनी पढ़ी-लिखी नहीं थी। उसने भी हिंदी में एम.ए. किया था। कविताएँ भी लिखती, किन्तु राहुल हमेशा उसको उलाहना देते "कहते क्या हिंदी में लिखती हो"। दूसरों के सामने भी राहुल उसकी हँसी उड़ाने से बाज नहीं आते, और धीरे-धीरे रागिनी ने लिखना ही छोड़ दिया। हाँ उसके ह्रदय में एक टीस अवश्य उठती थी, किन्तु राहुल के स्वभाव के सामने वह विवश थी।

शाम को पार्टी में पहुँची।

आज पार्टी में एक खेल रखा गया। पर्ची बांटी गईं,

पर्ची में जो लिखा था वही करना था सबको।

उसकी पर्ची में लिखा था "शुभकामना सन्देश"।

लिखना तो वह कबका छोड़ चुकी थी, कुछ याद ही नहीं आ रहा था। अचानक उसको अपने छोटे भाई के जन्मदिन पर लिखी कविता याद आई। बस उसने उसी की चन्द लाइनें सुनाना शुरू किया। पूरी महफ़िल में सन्नाटा छा गया। सब मंत्रमुग्ध होकर उसकी कविता सुन रहे थे, और फिर सबके आग्रह पर उसको पूरी कविता सुनानी पड़ी। सब लोग जोर-जोर से तालियां बजा रहे थे, महफ़िल में मानो चार चाँद लग गए थे। राहुल को भी मज़बूरी में तालियाँ बजानी पड़ रहीं थीं। रागिनी ने तिरछी नजरों से राहुल की ओर देखा, मानो कह रही हो यह देखो-"मेरी हिंदी मेरा अभिमान"।

मेरे अटल

प्रिया, सूरत और सीरत की धनी। जिसके ऊपर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की कृपा थी, और उस पर सोने पे सुहागा उसकी लेखनी। सत्ता और साहित्य की बातों के बीच ही बीता था उसका बचपन।

उसकी शादी के पाँच वर्ष हो चुके थे। पहली बार माँ बनने जा रही थी। पूरे दिन हो चले थे। दो दिन से तबियत थोड़ा सुस्त थी। अपने पति शिरीष को खाना देकर वो सोफे पर निढाल हो गई। टी.वी. खोला तो ऐसी खबर जो उसके लिये किसी सदमे से कम न थी और वह थी, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई जी के अत्यंत बीमार होने की खबर। और वो कब धीरे-धीरे अतीत में खो गई, पता ही नहीं चला।

घर पर बड़े भैया के कमरे के बाहर बड़ी सी खिड़की और उसमें लगी श्री अटल जी की सुनहरे फ्रेम में जड़ी फ़ोटो। जो बड़े भैया के आदर्श थे।
अटल जी की सादगी पूर्ण जीवन शैली, उनकी सरलता, वाक् पटुता, किसी से न डरने वाले, सत्ता से साहित्य तक की मजबूत पकड़ रखने वाले। उनके इन्हीं गुणों के कायल थे भैयाजी।

पता नहीं कौनसा अटूट रिश्ता था भैयाजी और अटलजी के बीच। दोनों कभी मिले नहीं। हाँ एक बार शहर में किसी सम्मेलन में एक हल्की सी झलक देखने को मिली थी। और उस दिन भैया की ख़ुशी का ठिकाना न था। प्रिया को बचपन से ही लिखने का शौक था और धीरे-धीरे अटलजी की कविताये भी प्रिया के लिये एक प्रेरणा स्त्रोत बनती जा रहीं थीं। और एक बार प्रिया का जन्मदिन यादगार बन गया जब भैयाजी ने अटलजी का काव्य संग्रह उसे उपहार में दिया, ये प्रिया के लिये अनमोल तोहफा था।

भैयाजी कहते "अटलजी जैसा कोई व्यक्ति नहीं है जिन्हें हर पार्टी, हर उम्र और हर तबके के लोग पसंद करते हैं। "

प्रिया कभी-कभी सोचती-मैं हिंदी में लिखती हूँ, ऐसा न हो कोई नीचा समझे। तब भैया ने समझाया देखो प्रिया "अटलजी भारत के ऐसे पहले विदेश मंत्री हैं जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में अपना भाषण दिया और भारत की गरिमा को और बढ़ाया। " और फिर प्रिया के मन में अटल जी के प्रति और अधिक मान-सम्मान बढ़ गया। ।

प्रिया की शादी के बाद आज भैयाजी ने ढेर सारी मिठाइयाँ और तोहफे भेजे। आखिर आज उनके अटलजी को भारत-रत्न जो मिला था। और उसे अब अटलजी और भैयाजी का रिश्ता गुरु-शिष्य का सा लगने लगा था। और तीन साल बाद इस खबर के बाद भैयाजी के ऊपर न जाने क्या बीत रही होगी। अचानक पेट में उठे दर्द ने उसकी

तन्द्रा भंग कर दी। आवाज लगाई -"शिरीष गाड़ी निकालो, अस्पताल जाना है। थोड़ी देर बाद प्रिया ऑपरेशन कक्ष में थी। कुछ समय बाद भैयाजी भी पहुँच गये। वे तो मानों दो हिस्सों में बँट गये थे। आधा दिमाग ऑपरेशन कक्ष की ओर और आधा टी.वी.पर चल रहे समाचार पर था जो अटल जी के बारे में पल-पल की खबर दे रहे थे।
अचानक ही एक लाइन देखी- "अटल जी नहीं रहे"।

भैयाजी स्तब्ध, वहीँ कुर्सी पर बैठ गये। ऑखें आंसुओं से भरने लगीं। और उंगलियाँ मोबाइल पर। शायद मन में उमड़ते भावों को कुछ लिखने की कोशिश कर रहे थे-

"एक अलग व्यक्तित्व था उनका, एक अलग पहचान,
भारत ने एक हीरा(लाल) खोया, मन हुआ आज वीरान। ।
उनके आंदोलन, उनकी कविताये, देती नई दिशायें,
आज अटलजी के जाने से, मायूस हैं फिजायें"।

और इतने में नर्स ने आवाज लगाई "भैयाजी बधाई हो, बेटा हुआ है- भैयाजी दौड़कर अंदर गये और जैसे ही बच्चे को गोद में लिया, बस दिल से एक ही आवाज आई- "मेरे अटल-मेरे अटल"।

जय-हिन्द

सूरज, कक्षा दसवीं का होनहार छात्र। पढाई के साथ-साथ हर क्षेत्र में अव्वल। कल 23 जनवरी थी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जयंती समारोह।
शहर के सबसे बड़े नाट्य गृह में सभी स्कूलों के बीच वेशभूषा एवं भाषण प्रति.रखी गई थी।

सूरज सुबह से ही कुछ-कुछ बोलता हुआ बैचेन सा घूम रहा था। बड़े भैया ने देखा तो पूछ बैठे-
"क्या हुआ सूरज, इतने बैचेन क्यों हो"?
अरे कुछ नहीं भैया।
कुछ तो--
और फिर सूरज ने बताया कि कल शहर के सभी स्कूलों के बीच प्रतियोगिता रखी गई है। मैं सुबह से ही नेताजी की जीवनी याद करने की कोशिश कर रहा हूँ। पर कुछ ठीक से नहीं हो पा रहा।

बड़े भैया ने समझाया, -देखो सूरज ऐसे जीवनी बस रटने से कुछ नहीं होगा। तुमको उनका पूरा जीवनपरिचय, इतिहास, उनके विचारों को समझना होगा। उनका जोश अपने भीतर समाना होगा तभी तुम सफल हो पाओगे।

फिर भैया ने सूरज को विस्तार पूर्वक नेताजी के बारे में बताया कि उन्होंने कैसे इतनी ऊँची पढाई की। उसके बाद वे सिविल सर्विसेज के लिये विदेश गये। उस समय ये सब किसी भारतीय के लिये आसान बात नहीं थी। किन्तु फिर भारत में चल रही राजनैतिक गतिविधियों के कारण वे सिविल सर्विस छोड़कर भारत आ गये और फिर यहाँ अंग्रेजों से भारत को आजाद कराने के लिये आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। अनशन और आंदोलनों में हिस्सा लिया। जय-हिन्द का नारा भी नेताजी ने ही दिया।
उनका कहना था "कि हमें अपनी ताकत पर भरोसा होना चाहिए। उधार की ताकत हमारे लिये घातक होती है। और कहते कि अगर कभी जीवन में झुकना पड़े तो वीरों की तरह झुकना।

उनका मानना था कि सफलता का सफ़र लंबा हो सकता है किन्तु उसका आना तय है इसलिए हमें निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिये। उच्च विचारों से दुर्बलता दूर होती है अतः हमें ह्रदय में उच्च विचार पैदा करते रहना चाहिये। ध्यान रखना सबसे बड़ा अपराध गलत के साथ समझोता करना होता है। और फिर भैया ने नेताजी के रंगून के जुबली हॉल में दिये गये भाषण को सुनाया जो बाद में एक इतिहास बन गया। और फिर दूसरे दिन--शहर के सबसे बड़े नाट्य गृह का विशाल मंच। सूरज की वेशभूषा बिल्कुल नेताजी की ही तरह। सूरज के चेहरे पर सूरज की भाँति, एक अनोखा तेज और आवाज में नेताजी के जैसा जोश। और उसने फिर बोलना शुरू किया-नेताजी का रंगून के जुबली

हॉल में दिया गया वही भाषण जो भैया ने उसे सुनाया था--- "स्वतंत्रता संग्राम के मेरे साथियो। स्वतंत्रता बलिदान चाहती है। आपने आजादी के लिये बहुत त्याग किया है। किन्तु प्राणों की आहुति देना शेष है। आजादी को आज अपने शीश फूल की तरह चढ़ा देने वाले पुजारियों की आवश्यकता है। ऐसे नोजवानों की आवश्यकता है जो अपना सिर काट कर स्वाधीनता की देवी को चढ़ा सकें। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। खून की एक-दो बूंद नहीं, इतना कि खून का एक महासागर बन जाये और मैं ब्रिटिश साम्राज्य को उसमें डुबो दूँ। पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। ढेरों शाबाशी मिली और मिली प्रथम पुरस्कार की ट्रॉफी।

सूरज के कदम तो जमीं पर ही नहीं पड़ रहे थे। उसे लग रहा था कि बस जल्दी से भैया के पास पहुँच जाये। और कहे देखो आपका सबक मैंने कितने अच्छे से सीखा। ।

पुस्तक मेला

गीता, एक कंप्यूटर इंजीनियर। आज उसे पहली तनख्वाह मिली और आज ही उसके जीत भैया का जन्मदिन। सोच रही थी आज खूब सुन्दर सा केक ले जाऊंगी, भैया के लिये। तो ऑफिस से निकल कर बाजार के लिये चल पड़ी। और अचानक बेकरी की दुकान के बाहर एक बेनर लगा दिखा, जिस पर उसके शहर में लगने वाले विशाल पुस्तक मेले का विज्ञापन था। मोबाइल निकाल कर उसका फ़ोटो खींच, जल्दी से केक लेकर घर पहुँच गई।

रात में सब काम से निवृत होकर मोबाइल खोलकर विज्ञापन पढ़ा। तो बहुत खुश हो गई, "अरे वाह यह पुस्तक मेला तो घर के ही पास बने हिंदी भवन में ही लगा हुआ है"।

उसे तो बिल्कुल चैन ही नहीं पड़ रहा था। और सोचते -सोचते वह कब अतीत में खो गई पता ही नहीं चला। उसका बचपन अभावों के बीच गुजरा। जब गीता तीन वर्ष की थी, पिता को कमर में न जाने क्या हुआ उन्होंने बिस्तर ही पकड़ लिया। गीता से एक वर्ष बड़े जीत भैया।

आमदनी का कोई जरिया भी नहीं था। धीरे-धीरे घर की स्थिति डाँवाडोल होती जा रही थी। और फिर माँ ने घर की ही पुरानी मशीन से सिलाई का काम शुरू कर दिया। उससे भी पिता की दवाईयां और जरुरत का खर्च जैसे-तैसे निकलता। किताबें भी माँ भैया बस की खरीद पातीं, फिर अगले वर्ष वही किताबें गीता के काम आ जातीं। उसको पढ़ने का बहुत शौक था। जब कभी पेन या पेंसिल लेने राम चाचा की स्टेशनरी

की दुकान पर जाती तो रंग-बिरंगी किताबों को देखकर निहारती रहती। सोचती जब मैं बड़ी हो जाऊँगी तो काम करके पैसे लाऊंगी और ढेर सारी रंग-बिरंगी किताबें खरीदूँगी।

समय पँख लगाकर निकलता जा रहा था। गीता मिडिल स्कूल में आ गई थी। घर के पीछे एक अनाथालय था। वहां बच्चों को देखती तो सोचती बहुत कुछ ये मेरे जैसे ही हैं। और फिर आगे की पढ़ाई कुछ सामाजिक मदद और कुछ छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर पूरी की।

अचानक माँ की आवाज सुनकर उसकी तन्द्रा भंग हो गई। आज तो नींद भी उसकी आँखों से कोसों दूर थी। सुबह हुई। तैयार होकर ऑफिस के लिये निकली, किन्तु उसके कदम अपने आप पुस्तक मेले की ओर बढ़े चले जा रहे थे। वहां पहुंचकर सबसे पहले उसने बच्चों की ढेर सारी कविता, कहानी, नीति शिक्षा, चित्रकला की पुस्तकें खरीदीं। भैया को खेलकूद में रूचि थी तो उनके लिये उसी की किताबें लीं। माँ के लिये बड़े अक्षर वाली, मोटी जिल्द की रामायण खरीदी। आज गीता के मन को वैसी ही शाँति मिल रही थी जैसे किसी किसान को अपने सूखते हुए खेत पर वर्षा की बूंदें पड़ने पर होती है। एक-एक किताब उसके कलेजे को ठंडक पहुंचा रही थी। अपने लिये उसने मुंशी प्रेमचंद की निर्मला, गोदान, गबन और पंच-परमेश्वर खरीदीं। और फिर अचानक उसके कदम अनाथालय की ओर बढ़ चले। सब बच्चों को रंग-बिरंगी किताबें बाँटीं। बच्चे खूब खुश हो रहे थे और उन बच्चों के चेहरे की ख़ुशी देखकर गीता को लग रहा था मानों आज उसने अपना बचपन जी लिया हो।

डर

प्रिया, एक मध्यम वर्गीय परिवार में पली बढ़ी सीधी-सादी, संस्कारी लड़की, सूरत और सीरत की धनी, पढ़ाई में अव्वल। उसके मामा शहर में रहते थे, लिहाजा उनके जरिये प्रिया का विवाह शहर के ही एक उच्चवर्गीय परिवार में तय हो गया। शैलेष पेशे से इंजीनियर।

प्रिया बहुत खुश थी, किन्तु जिस दिन से विवाह तय हुआ सब प्रिया को बात-बात पर टोंकते। तुम ये सीखो वो सीखो। अब तुमको शहर के तौर तरीकों के हिसाब से चलना होगा। वहाँ नहीं चलेगा ये देहाती पन, और इन सब बातों को सुन-सुन कर प्रिया के मन में ससुराल के प्रति एक अनजाना सा डर बैठता जा रहा था। ज्यों-ज्यों विवाह के दिन नजदीक आ रहे थे, उसका उमंग और उत्साह उतना ही कम होता जा रहा था। शायद शहर की चकाचोंध उसकी खनकती हुई हँसी पर भारी होती जा रही थी।

ऐसा नहीं था कि शैलेष का बर्ताव अच्छा नहीं था। बराबर फ़ोन आते थे उसके। और यही कारण था कि प्रिया का जो दर्द घरवाले उसका चेहरा देखकर भी न समझ पाये, वो शैलेष ने फ़ोन पर प्रिया की आवाज से महसूस कर लिया।
उसने अपनी बातों से प्रिया को विश्वास में लेकर पूछा तो उसको रोना आ गया और फिर रोते-रोते अपनी बात कह डाली।

सुनकर शैलेष हँसने लगा,.. बोला-" पगली बस इतनी सी बात" "अरे मैं हूँ ना तू क्यों फ़िक्र करती है"। और उसने प्रिया को शाँति से समझाया। और थोड़ी देर बाद प्रिया की हँसने की आवाज बाहर तक आ रही थी। वही उमंग, वही उत्साह और वही खनकती हुई हँसी।

चंदा की चुनरी

आज सुबह से ही चंदा बहुत खुश थी। शाम को मेला घूमने जाना है। सोलह साल की चंदा, चुलबुली, माँ-बापू की लाड़ली। सुबह से उठकर घर की साफ़-सफाई करती, गाय के चारा-पानी की व्यवस्था, फिर स्कूल। दोपहर को घर आकर माँ का हाथ बंटाती। और शाम को सहेलियों के साथ खेत पर मौज-मस्ती। सोच रही थी आज तो मेले से खूब सुन्दर रंग-बिरंगी चुनरी लाऊँगी। आज जल्दी-जल्दी स्कूल से घर आई, आँगन की खूंटी पर बस्ता टाँगकर आवाज लगाई, माँ,,, जल्दी चाय बना लो फिर मेला जाना है।

माँ बोली रुक,, आती हूँ।

रसोई से खुशबू आई तो चंदा बोली-- " माँ क्या बना रही हो"??

माँ--अरे पास के गाँव के चौधरी चाचा तुझे देखने आ रहे हैं।

चंदा---क्यों!!

माँ---अरे अब तेरा ब्याह जो करना है।

चंदा--माँ, मुझे नहीं करना अभी शादी। खूब पढ़ना है, फिर अपनी बेला बहिनजी के जैसे टीचर बनना है।

माँ--तू शादी कर ले, फिर कर लेना पढ़ाई।

चंदा--अभी नहीं माँ, कहते हुए उसकी आवाज भर आई।

इतने में बाहर से ट्रैक्टर रुकने की आवाज आई। आँगन से बाहर झांककर देखा तो बापू और उनके साथ दो सज्जन पुरुष दिखाई दिये। चंदा समझ गई ये वही हैं। वह भागकर कमरे में चली गई। सब लोग आँगन में बैठे। थोड़ी देर बाद चंदा को बुलाया, आकर प्रणाम कर चुपचाप बैठ गई।

चौधरी जी ने पूछा--बेटी क्या पढ़ रही हो?

तुम्हें क्या-क्या करना अच्छा लगता है, वगैरह वगैरह। ।

थोड़ी देर चंदा चुप रही और फिर उसने एक साँस में अपनी पूरी मन की बात कह डाली। सब लोग उसकी बात मंत्र-मुग्ध होकर सुन रहे थे। हाँ बापू के चेहरे पर जरूर नाखुशी के भाव दिख रहे थे।

अचानक चौधरीजी उठे और चंदा की पीठ थपथपाकर बोले--बेटी मैं तुम्हारी बात से बिलकुल सहमत हूँ। उन्होंने अपना बैग खोला और उसमें से एक सुन्दर सी रंगीन चुनरी निकाली। और चंदा से बोले,, लो इसे मैं अपनी बहु के लिये लाया था, किन्तु अब एक बेटी को दे रहा हूँ।

चौधरी जी जाने के पहले बोले--आज से चंदा की पूरी पढ़ाई मैं करवाऊंगा।

चंदा अपने कमरे में आईने के सामने चुनरी ओढ़कर ख़ुशी से फूली न समा रही थी। सोच रही अब मेले जाने की जरुरत भी नहीं है। चंदा को उस रंग-बिरंगी चुनरी में अपना उज्जवल भविष्य साफ़ नजर आ रहा था।

बोन्साई

अनु ने यूनिवर्सिटी से आकर जैसे ही कमरे का ताला खोला, मोबाइल की घंटी बज उठी दूसरी तरफ माँ थीं

माँ--- अनु, तेरी सरला भाभी नहीं रहीं,,,!

अनु---क्या कह रही हो माँ? और अनु पलंग पर धम से बैठ गई। माँ से पूरी बात ही न कर पाई। धीरे-धीरे तकिया आंसुओं से भीगने लगा। अनु का मन-मस्तिष्क पीछे की ओर जाने लगा।

सरला भाभी, घर के बाजू में रहने वाली ताईजी की बहू। दस वर्ष पूर्व हुआ था उनका ब्याह। अपने नाम के अनुरूप सीधी, सरल, सहज। मुहल्ले में सब बच्चों की लाड़ली। किन्तु न जाने क्यों अनु ने कभी भी ताईजी को, भाभी से खुश नहीं देखा।

सुबह होते ही-"क्यों री सरला,,, "शब्द से ताईजी का चिल्लाना शुरू हो जाता। भैयाजी भी रसूखदार, राजनीति में अच्छी पहुँच रखने वाले। वो भी बिलकुल ध्यान न देते भाभी के ऊपर। कई-कई दिनों घर से बाहर रहते। धीरे-धीरे पांच वर्ष बीत गये। बच्चा भी न हुआ भाभी को। शायद ताईजी की बातें सुन-सुनकर भाभी की कोख भी सूख गई थी। ताईजी को एक बहाना और मिल जाता था।

एक बार डॉक्टरी जांच करवा आईं धीरे से मायके में। सब ठीक था। दबी जबान से भाभी ने भैयाजी से डॉक्टरी जांच के लिये बोला तो बिफर उठे,,,, आखिर ये उनकी मर्दानगी का सवाल था। धीरे-धीरे भैयाजी का कद राजनीति में जितना ऊँचा होता जा रहा था भाभी का उतना ही छोटा,,,।

समय पंख लगाकर उड़ रहा था। अनु की छत से ताईजी का आँगन साफ़ दिखाई देता था। उसकी मुलाकात रोज भाभी से एक बार छत पर ही होती थी, जब भाभी कपडे सुखाने आतीं थीं। धीरे-धीरे दोनों सहेलियां बन गई। भाभी कभी अपनी कोई बात न बतातीं, पर उनकी सूनी आँखें सब बयां कर देतीं। और एक दिन अचानक,,,। अनु को बोन्साई का बड़ा शौक था। उसने अनार का बोन्साई लगाया था। जो छत की खिड़की में रखा रहता था। एक दिन अचानक भाभी बोलीं---अनु, मेरी जिंदगी शायद इस बोन्साई की तरह है,, जिसकी उम्र तो बढ़ी किन्तु कद,,, और भाभी रुआंसी सी नीचे चलीं गईं। अनु ने तुरंत उस बोन्साई को उठाया और घर के पिछवाड़े मिट्टी में लगा आई।

कुछ समय बाद अनु स्नातकोत्तर के बाद पी.एच.डी. करने पास के शहर में चली गई। और आज,,,। तभी दरवाजे की घंटी से उसकी तन्द्रा भंग हो गई। खोला तो उसके खाने का टिफ़िन आया था। मन तो ख़राब था ही, सो वापस कर दिया। मुंह-हाथ धोकर दो जोड़ी कपड़े बैग में डाले। सोचा सुबह छह बजे पहली बस से निकल जाऊंगी। आज तो नींद भी आँखों से कोसों दूर थी। सुबह घर पहुँची, बैग को कमरे में पटक सीधे छत पर दौड़ी गई। देखा आँगन के बीचों-बीच भाभी का पार्थिव शरीर रखा हुआ

था। लेकिन चेहरा देखकर लग रहा था कि जैसे भाभी कुछ कहना चाह रहीं हों। एक मैं ही तो थी उनकी हमदर्द।

एक तरफ भैया चुपचाप बैठे भाभी को देख रहे थे। अनु के मन में आ रहा था कि उनका गिरेबान पकड़ कर बोलूँ, कभी जीते-जी भी देखा होता भाभी की ओर। दूसरी तरफ हमेशा "क्यों री सरला" कहने वाली ताईजी हाय मेरी सरला,, कह कर रो रहीं थीं। उनके बनावटी आँसूं साफ़ नजर आ रहे थे। उसने मन में निश्चय किया कि अब बस,, कुछ भी हो, ताईजी और भैयाजी को एक बार उनकी गलती का अहसास दिलाना होगा। शायद इस से भाभी की अतृप्त आत्मा को थोड़ी सी शाँति तो पहुंचे। और अब इसके लिये मुझे तेरहवीं तक का इन्तजार करना पड़ेगा अनु दौड़कर कमरे में गई। डायरी पेन निकाला और आवेदन पत्र लिखने बैठ गई,,,,

आदरणीय कुलपति महोदय,

मेरी भाभी का दुखद निधन हो जाने के कारण मुझे पंद्रह दिनों का अवकाश,,,,,,,,, ।

प्रार्थी

अनु

भ्रमजाल

मिश्राजी की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। बेटे का ब्याह तय हो गया था। पास के शहर में, बहुत बड़े इंजीनियर की बिटिया के साथ। लड़की पढ़ी-लिखी और साथ में दान-दहेज़ भी ढेर सारा, पर इसके बिलकुल उलट मिश्राइन को बहुत चिंता हो रही थी। इतने बड़े घर की बेटी। मैं ठहरी सीधी-सादी। मन में घुमड़ते ढेर सारे सवाल,,, "क्या पता समन्वय बैठा पायेगी कि नहीं"???

कभी बीमार होने पर तीमारदारी करेगी कि नहीं??

पति और बेटे की पसंद के आगे बेबस थी मिश्राइन। बेटा भी बात-बात में झिड़क देता,,, क्या माँ तुम भी पुराने विचारों की। थोडा तो आधुनिक बनो।

शादी में अभी दो माह शेष थे। मिश्राइन की चिंता उन्हें अंदर ही अंदर परेशान कर रही थी। सोचती,, बेटा तो ज्यादा सुनता नहीं, बहू भी कहीं ऐसी हुई तो--,

जैसे-तैसे दो माह निकल गये। धूमधाम से शादी संपन्न हुई। शुरू के कुछ दिन तो शादी के रीति-रिवाजों और मेहमानों की आवाजाही में गुजार गये। अंदर से खोखली होती जा रही मिश्राइन ने बिस्तर ही पकड़ लिया।

आज सुबह से ही तबियत ख़राब लग रही थी। रात हुई, दवाई देकर सब लोग सोने चले गये।

देर रात गये, कुछ खटका सा हुआ, मिश्राइन की नींद खुल गई, देखा तो बहू, उनके पैर में तेल मल रही थी। आँखों को विश्वास ही नहीं हुआ, बोलीं, बहू तुम,,,,,,,

बहू बोली----हाँ माँ जी मैं, सब लोग सो गये। मैंने सोचा, तेल की मालिश से आपको आराम मिलेगा।

सुनकर मिश्राइन का सारा भ्रमजाल टूट गया। आँखों से झर-झर आँसूं बहने लगे। लग रहा था, मानों महीनों से सीने पर रखा बोझ आज पिघलकर आसुंओं के रूप में बह रहा हो। मिश्राइन बोलीं जाओ बहू सो जाओ, बहुत रात हो गई है। मैं अब बहुत जल्दी ठीक हो जाऊंगी।

मन से बहू के लिए ढेर सारी दुआयें निकल रहीं थीं---खूब सुखी रहो, आबाद रहो,,,,,।

खजाना

पूरी रात से मूसलाधार बारिश हो रही थी। हरिया के माथे की लकीरें और गहरी होती जा रहीं थीं। पत्नी चंपा पूरी रात से बुखार में तप रही है। कई बार उठकर माथे पर पानी की पट्टी रखी। तब जाकर ताप थोड़ा कम हुआ। अब तो हरिया की हिम्मत भी जवाब देने लगी थी। सोच रहा था,,, आज रिक्शा कैसे चलाऊँगा, और जब तक पांच-छह सवारी नहीं मिल जातीं तब तक चंपा
की दवाई का इंतजाम भी न हो पायेगा। ऊपर से पूरी छत से भी पानी जगह-जगह से टपक रहा था।

चूल्हे को एक कोने में खिसकाकर, दो लकड़ी जलाकर दो कप चाय बनाई। एक कप चूल्हे के पास चंदा के लिये ढँककर, रिक्शा में पन्नी बाँधने चला गया। पैर भी दर्द के मारे नहीं उठ रहे थे। धीरे-धीरे पैडल मारकर रिक्शा चौराहे तक पहुँचा, तो देखा एक कार के अंदर से एक महिला, हाथ हिलाकर उसको बुला रही थी। पास पहुंचा तो महिला बोली--भैया मेरी कार ख़राब हो गई है घर तक पहुंचा दोगे?
जी बहिनजी,,, कहकर हरिया ने थोड़ी सी पन्नी की आड़कर उनको रिक्शा में बैठाया। घर पहुंचकर महिला पर्स से पैसे निकालने लगी। उसे हरिया के चेहरे पर बैचेनी और चिंता के भाव साफ़ नजर आ रहे थे। आखिर पूंछ ही बैठी---क्या हुआ भैया??
हरिया--जी कुछ नहीं बहिनजी,, अरे! कुछ तो, और फिर हरिया ने चंपा की तबियत के बारे में बताया। उसने कहा रुको, और महिला अंदर गई। कुछ देर बाद लौटी तो उसके हाथ में कुछ दवाई और एक कार्ड था।

उसने कहा मैं एक डॉक्टर हूँ। ये दवाई चंपा को खिला देना और ये कार्ड लेकर सुबह अस्पताल आ जाना। चंपा का इलाज हो जायेगा। यह सुनकर तो हरिया की ख़ुशी का ठिकाना ही न था। कहने लगा---बहिनजी खूब-खूब धन्यवाद आपका। आप सदा सुखी रहें। खूब फलें-फूलें। आज हरिया को उनमें किसी देवी का रूप नजर आ रहा था।
हरिया ने दवाई और कार्ड को अपने गमछे में लपेटकर सीट के अंदर रख लिया। मानों जैसे कोई खजाने को रखता हो। और वाकई आज ये उसके लिये खजाना ही तो था, और अब उसके पैर, पैडल के ऊपर कई गुना तेजी से चल रहे थे। ।

संकल्प

आज चंदना बहुत खुश थी। उसके छोटे बेटे का भी ब्याह हो गया था। बहू भी, खूब बड़े परिवार की इकलौती संतान।

सोच रही थी आज मैं, किसी हद तक अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो गई हूँ। धीरे-धीरे दो चार दिनों में मेहमान भी जा चुके थे और कुछ दिनों में बहू भी अपने पीहर जाकर वापिस आ चुकी थी।

घर शाँति पूर्ण ढंग से चल रहा था किन्तु कुछ दिनों बाद छोटी बहू की हाजिर-जवाबी, सबके सामने बेबाक बोलना चंदना को चुभने सा लगा था। और आज उसकी बनाई सब्जी में, सबके सामने एकदम से मीनमेख निकलना, उसे कुछ अच्छा नहीं लगा।

आकर चुपचाप कमरे में लेट गई। धीरे-धीरे उसका मस्तिष्क उसे दस साल पीछे की ओर ले जाने लगा। जब उसके बड़े बेटे की शादी हुई। सुप्रिया, नाम के अनुरूप सुन्दर, सरल, सहज स्वभाव की। किन्तु चंदना में उस समय वही सास वाला दम्भ। और उसका यही स्वभाव उसे सुप्रिया के लिये, पूरे समय कुछ न कुछ तीखा बोलने पर मजबूर कर देता।

आज वह सोच रही थी, दस साल हो गये, उसने कितनी बार बिना गलती के भी डांटा। कितनी बार स्वास्थ्य ख़राब होने का भी लिहाज नहीं किया

सुप्रिया,,,, माँ जी,, बस बोलकर चुप रह जाती थी। आज चंदना में आत्मग्लानि के भाव पैदा हो रहे थे। अपने आप को ओछा महसूस कर रही थी। सोच रही थी चाहे-अनचाहे, उसने सुप्रिया के साथ गलत तो किया ही है। बस उसने प्रण किया,,, अब मुझे सब ठीक करना है।

चंदना सुबह उठी---"एक नई सोच, एक नये संकल्प के साथ,,,, सुप्रिया को उसके हिस्से का प्यार,,, और छोटी बहू के अनियंत्रित शब्दों पर नियंत्रण,,,,।

नशा

आज फिर हरिया, देर रात गये नशे में आया और पूरा घर आसमान पर उठा लिया। सिया की पूरी रात आंसुओं में गुजरी।

हरीराम, गांव का होनहार, बारहवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण युवक। सब उसे प्यार से हरिया कहते थे। पिता की खेती-बाड़ी भी अच्छी तरह से सम्हालता।

बड़ा हुआ तो सिया के साथ उसकी शादी हो गई। सिया भी पास के गांव की ही बारहवीं पास सुन्दर, सुशील, गुणी लड़की। घर सुचारू रूप से चल रहा था।

समय पंख लगाकर उड़ रहा था। तीन बच्चे भी हो गये। माँ-पिता भी अब बुजुर्ग हो चले थे। सब काम हरिया और सिया ने संभाल लिया था। कुल मिलाकर गृहस्थी सुचारू रूप से चल रही थी, किन्तु कुछ दिनों से न जाने हरिया को किसकी बुरी संगत लगी, वह रोज नशे में घर आने लगा। सिया सोचती कुछ दिन में सब ठीक हो जायेगा। हरिया भी उसे बहला-फुसलाकर बात टाल देता,,,, किन्तु धीरे-धीरे स्थिति और बिगड़ने लगी। हरिया साँझ तले खेत से सीधे दोस्तों के साथ निकल जाता और रात में नशे में धुत घर लौटता।

धीरे-धीरे उसकी गृहस्थी बिखरने सी लगी। बच्चे भी हरिया को देखकर सहमे-सहमे से रहते। नींद सिया की आँखों से कोसों दूर रहती। अब तो हरिया को सुधारना एक बहुत बड़ी चुनोती बन गई थी।

एक दिन सिया अपनी छोटी बेटी को टीका लगवाने अस्पताल गई, वहां एक नई डॉक्टरनी साहिबा आईं थीं। उनसे मिलकर सिया को बहुत अच्छा लगा। और बातों ही बातों में सिया ने अपनी पूरी बात उनको बता दी। उन्होंने उसे पास के ही शहर के नशा-मुक्ति केंद्र के बारे में बताया। कि वहां कुछ महीने हरिया को रखने पर वह ठीक हो जायेगा। हालाँकि बुजुर्ग सास-ससुर, तीन छोटे बच्चों के साथ अकेले घर व खेती सम्हालना भी किसी चुनोती से कम न था किन्तु हरिया को ठीक करने की खातिर उसने यह भी स्वीकार कर लिया।

अब सबसे बड़ी समस्या थी, हरिया को नशा-मुक्ति केंद्र ले जाने की। सिया समझदार तो थी ही। दूसरे दिन अपने बच्चों को लेकर गांव के सरपंच जी के पास गई। हरिया की हालत, उसके दुर्व्यवहार के बारे में बताया। और अगले ही दिन सरपंच जी ने फैसला सुनाया कि ग्राम-पंचायत के खर्चे पर ही हरिया को छह माह के लिये शहर के नशा- मुक्ति केंद्र में रहना होगा। साथ ही उसके परिवार की देखभाल भी ग्राम-पंचायत ही करेगी।

और अगले सप्ताह सिया अपने बच्चों के साथ हरिया को लेकर नशा-मुक्ति केंद्र के कार्यालय में खड़ी थी। आने वाले सुखमय समय की कल्पना करते हुए,,,,,,, । । । । । ।

हेराफेरी

सुधीर और चन्दर, बचपन के दो दोस्त। साथ खेले, साथ पढ़े। साथ में ही स्नातक की पढाई की। दोनों के स्वभाव में काफी अन्तर था। चन्दर बिलकुल शांत तो सुधीर बेबाक बोलने वाला,,,, फिर भी न जाने कैसी दोस्ती थी दोनों में। एक दूसरे के बिना रह ही नहीं पाते थे।

आगे चलकर कुछ ढंग की नोकरी न मिल पाने पर दोनों ने साथ मिलकर व्यवसाय करने का फैसला किया। एक छोटी सी दुकान किराये पर लेकर कपड़े का काम शुरू किया। दोनों की मेहनत रंग लाई और कुछ समय पश्चात् शर्ट सिलने का एक छोटा सा कारखाना भी शुरू हो गया। शुरू में दो लोग, फिर चार और फिर धीरे-धीरे व्यवसाय ऊंचाई छूने लगा। किन्तु दोनों का स्वभाव वही रहा। एक शांत तो दूसरा बेबाक। और कहते हैं कि कई बार जब लक्ष्मी आती है तो बहुतों की नीयत में खोट आते देर नहीं लगती। एक दिन एक सड़क दुर्घटना में चन्दर की कमर में काफी चोट आई और उसने बिस्तर ही पकड़ लिया। काम की जवाबदारी सुधीर के ऊपर आ गई। शुरू में कुछ दिन सब ठीक रहा। सुधीर बकायदा उसका हिस्सा घर देकर आता। और सब जानकारी भी, किन्तु धीरे-धीरे उसकी नीयत में खोट आने लगी। पहले कुछ पैसों की हेराफेरी और फिर कागजों की। चन्दर की तबियत सुधरने का नाम नहीं ले रही थी। उसकी दो बेटियाँ भी बड़ी हो रहीं थीं। और इधर सुधीर का एक बेटा। बाद में सुधीर की नीयत का असर उसके बेटे पर पड़ने लगा। ख़राब संगत और मौज-मस्ती उसकी जिंदगी को पतन के रास्ते पर ले जा रही थी।

इधर अब सुधीर ने चन्दर की सुध लेना भी छोड़ दिया, सारा व्यवसाय भी अपने नाम कर लिया। चन्दर की बेटियों ने अपना हक़ मांगने की कोशिश की,,, किन्तु सब बेकार, और उन्होंने बाद में वह भी छोड़ दिया।

एक दिन एक जुआघर पर पुलिस की कार्रवाई हुई तो सुन्दर का पुत्र भी उसमें पकड़ा गया। जमानत पर छूटकर बेटा जब घर आया और सुधीर ने जब उसकी ओर ध्यान से देखा, तब तक शायद बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने बेटे को सुधारने की बहुत कोशिश की किन्तु सब बेकार।

और अचानक एक दिन जब सुधीर कारखाने से घर लौट रहा था, उसकी गाड़ी सिग्नल के इंतजार में चौराहे पर खड़ी थी। सड़क किनारे एक पेड़ के नीचे, बिलकुल सादे कपड़ों में उसे एक जानी-पहचानी सी औरत खड़ी दिखी। ध्यान से देखा तो,,,,, सुषमा भाभी थीं, चन्दर की पत्नी। जो कभी उसकी सबसे सम्मानीय सुषमा भाभी हुआ करतीं थीं। उनको देखकर सुधीर का दिमाग सुन्न हो गया। उसे लगा उनकी इस हालत का जिम्मेदार वही है और शायद मेरे बेटे की यह हालत मेरे कुकर्म और कहीं न कहीं सुषमा भाभी और उनकी दोनों बेटियों की आहें,,,, । आज सुधीर को अपने आप से घृणा हो रही थी, आखिर अपने बचपन के दोस्त के साथ कोई ऐसे कैसे कर सकता है। उसकी आँखों से आत्मग्लानि आंसुओं के रूप में झर-झर बह रही थी,,,,, और थोड़ी देर बाद वह चन्दर के घर की ओर चला जा रहा था। उसका, सुषमा भाभी का और दोनों

बेटियों का मान-सम्मान, अधिकार, उनकी छीनी हुई सभी खुशियाँ वापस लौटाने और अपने पापों का प्रायश्चित करने,,,,,, ।

शर्मीली

पंडित दीनानाथ, विशुद्ध ब्राम्हण, कर्मकांड में विश्वास रखने वाले। घर मैं पंडिताईन और बेटी शर्मीली। बिलकुल यथा नाम तथा गुण जैसी। अपनी पढ़ाई और घर का काम। सड़क पर भी चलती तो हमेशा नजरें झुकी रहतीं। घर से लगा हुआ घर पंडितजी के छोटे भाई का था। जिसका ऊपरी हिस्सा उन्होंने किराये पर उठा रखा था। उस में कुछ दिनों से एक इंजीनियर लड़का, शेखर रहने आया हुआ था। देखने में सुन्दर, सुशील, मृदुभाषी। वह हमेशा छत से शर्मीली को देखता,,, बस अपने काम से काम, नजरें हमेशा नीचे। और बस एक दिन शेखर पहुँच गया पंडितजी के घर अपना रिश्ता लेकर।

पंडितजी ठहरे विशुद्ध ब्राम्हण और शेखर दूसरी बिरादरी का। शादी की बात सुनते ही उनका पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। शेखर को फटकार तो लगाई ही,,, छोटे भाई को भी चार बातें सुनाने में कसर न छोड़ी। शेखर को भी उसी वक़्त घर छोड़ना पड़ा।

समय बीतता जा रहा था। शर्मीली की स्नातक की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। कुछ महीनों बाद शर्मीली का ब्याह पास के ही शहर में हो गया। लेकिन नियति को न जाने क्या मंजूर था। शादी के एक माह बाद ही उसके पति का एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। शर्मीली पर तो मानों पहाड़ ही टूट पड़ा। पंडिताईन ने तो यह समाचार सुनते ही बिस्तर पकड़ लिया। पंडितजी भी बेटी के सामने अपने मजबूत होने की एक असफल कोशिश कर रहे थे।

कुछ दिन ठीक रहा और फिर शुरू हो गया ससुराल में ताने देने का दौर। शर्मीली अंदर से और भी टूटती जा रही थी। वह तो कुछ न बोलती, किन्तु एक दिन जब पंडितजी अचानक बेटी से मिलने पहुँचे, तो दो-चार बातें उनके भी कान में पड़ गईं। लिहाजा बेटी को अपने साथ ले आये।

पंडिताईन जब बिटिया की सूनी आँखे देखतीं तो कालेज मुंह को आ जाता और कभी दूसरी शादी की बात करतीं तो पंडितजी का धर्म, उनके रीति-रिवाज आड़े आ जाते। पंडिताईन ने भी छह माह बाद आँखे मूंद लीं।

घर पर शर्मीली और बस पंडितजी। वह स्नातक पास तो थी ही, पास के ही स्कूल में पढ़ाने जाने लगी। सुबह पिताजी के पूजा-पाठ की तैयारी, फिर खाना फिर स्कूल। यही दिनचर्या थी। शुरू में पंडितजी व्यस्त रहते,, उन्होंने शर्मीली की ओर ध्यान ही नहीं दिया। समय धीरे-धीरे गुजरता जा रहा था। और अब शर्मीली को देखकर उनका मन भर आता, सोचते मेरे जाने के बाद क्या होगा???

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - साधना छिरोल्या

जन्म - 17 मार्च 1964, जबलपुर

शिक्षा - बी.एस.सी., बी.एड. (गणित)

पता - यूनियन बैंक के सामने, राय चौराहा, दमोह (म.प्र.) 470661

मो. - 7089735135

ई मेल - Sadhnachhirolya123@gmail.com

प्रकाशन -1. गहोई सूर्य अखबार जबलपुर (म.प्र.)

2. गहोई संस्कार, जबलपुर (म.प्र.)

3. लोकजंग, भोपाल (म.प्र.) आदि में रचनाओं का प्रकाशन

4. वाह जिंदगी (काव्य संग्रह)

सम्मान - भाषण, नाटक, वाद-विवाद, तात्कालिक निबंध, कविता एवं सुलेख प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त।

गहोई समाज एवं हितकारिणी स्कूल जबलपुर द्वारा हिंदी काव्य लेखन के लिए सम्मानित।

अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-004-9

मूल्य- 60/-